सादर प्रकाशनार्थ,

निःशुल्क स्वस्थ–मन, सुखमय जीवन शैली शिविर का शुभारम्भ

कोरबाः 07.09.2017–प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय विश्व सद्भावना भवन कोरबा में बी.के. रामकृष्णा, शांति सरोवर हैदराबाद, कमाण्डर शिव सिंह, बहन रेणु अग्रवाल महापौर नगर पालिक निगम कोरबा, ननकी राम कंवर पूर्व गृह जेल एवं सहकारिता मंत्री छ.ग.शासन, भ्राता अतुल ठक्कर वरिष्ठ मण्डल प्रबंधक न्यू इण्डिया इन्सयुरेन्स कोरबा ने सात–दिवसीय स्वस्थ–मन, सुखमय जीवन शैली शिविर का शुभारम्भ दीप प्रज्जवलित करके गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में किया गया। मान्नीय ननकी राम कंवर ने कहा कि मन यदि स्वस्थ है तो अच्छा कार्य करने की प्रवृत्ति बढ़ेगी। सही बोलने से सभी को अच्छा नहीं लगता लेकिन उसके दूरगामी परिणाम अच्छे ही होते हैं। यदि मन आपका स्वस्थ नहीं है तो सुख का संसार भी आपको दुःखमय लगेगा। मन यदि आत्मा से संचालित होता है तो मन आपका स्वस्थ होगा। बहन रेणु अग्रवाल महापौर ने आये हुए सभी अतिथियों का सहृदय से स्वागत किया। कमाण्डर शिव सिंह दिल्ली ने कहा कि मैं मिसाईल के निर्माण में कार्य करता हूँ, मुझे यह सब देखकर ब्रह्मास्त्र की याद आती है। जिसकी मंजिल निश्चित होती है। वह चुनौतियों का सामना कर सकता है। यह आवाज की गति से कई गुणा तेज चलती है। इस तरह हमें अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाने का लक्ष्य रखना चाहिए।

डायमण्ड जुबली भवन जमनीपाली के सभागार में आयोजित शिविर में बी.के. रामाकृष्णा, शांति सरोवर हैदराबाद ने कहा कि मन हमारा आज्ञाकारी दोस्त है जिसे हमं समय–समय पर सशक्त करने की आवश्यकता होती है। मन की आवाज को सुनं और उस पर ध्यान दें। अपने आप के साथ कुछ समय बितायें और मन की भावनाओं को समझें। जैसे आप परिवार की भावनाओं को ध्यान देते हैं, वैसे ही आप अपनी स्वयं की भावनाओं को भी समझें। मन को अमन व दमन करने का प्रयास न करें लेकिन उसे सुमन बनायें। जैसे शरीर को स्वस्थ रखने के लिये हम एक्सरसाईज करते हैं वैसे ही मन की भी एक्सरसाईज करने का प्रशिक्षण लें। भ्राता दीपक दुबे उप महाप्रबंधक एन.टी.पी.सी.कोरबा ने कहा कि स्वस्थ मन में सदाचार, शिष्टाचार और परोपकार के गुण सहज ही सन्निहित होते हैं जो कि अंतर्रात्मा से आते हैं। यदि हम इन्हें प्राप्त कर लेते हैं तो सबसे पहले तो हमारा जीवन सुखमय हो जाता है और हम जिनसे संबंध रखते हैं उनका जीवन भी सुखमय बन जाता है। यह एक ग्लोरियस सर्किल है जिसमें हम स्वयं को सुखमय रखके दूसरों को सुखमय बनाने में सफल होते हैं। अंतर्रात्मा की आवाज हमें सदा ही

सचेत करती है कि पाप कर्मों से हमें दूर रहना है, जिसका परिणाम भी भोगना ही पड़ता है। ईश्वर की प्रार्थना और उनका सिमरण मन को शक्ति प्रदान करता है। भ्राता अनिल देशमुख सहायक अभियंता एच.टी.पी.एस दर्री कोरबा ने कहा कि जब हम अपने जीवन में सात्विकता लाते हैं तभी उस सत्ता परमात्मा का ध्यान कर पाते हैं। जितना ही साक्षी भाव होगा उतना ही हमारा मन अनासक्त बनता जायेगा। सात्विक भोजन से हमारे व्यवहार में सात्विकता आती है। कु. नेहा ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया।

यह निःशुल्क सात दिवसीय शिविर प्रातः 6:00 से 7:30 बजे राजयोग केन्द्र साडा कालोनी जमनीपाली तथा सायं 7:00 से 8:30 बजे तक ब्रह्माकुमारीज टी.पी.नगर कोरबा में रखा गया है।

मानवता की सेवा में, ब्रह्माकुमारी रूकमणी में